5/12/1967 मंगलवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– आज नहीं तो कल, बिखरेंगे ये बादल,
हो रात के भूले हुए मुसाफिर, सुबह हुई घर चल, अब घर चल रे.....

ओम शांति! गीत बजाना, तो पहले उस गीत का अर्थ खुद समझना चाहिए। यूँ जिंदगानी से तो कोई भागता ही नहीं है। बाप तो कहते हैं– तुम्हारी जिंदगानी मोस्ट वैल्युएबल है। जैसे त्रिमूर्ति शिव की जयन्ती कहते हैं हीरे समान है और बाकी सब जयन्ती कौड़ी समान है, तो अर्थ है। तो ये भी बरोबर है कि तुम बच्चों की, जो उनके बालक बने हो, जो निश्चय–बुद्धि हैं, तो उनकी भी हीरे समान। जानते हो कि बरोबर, ज़रूर कोई–2 चीज़ को सब कहते हैं ना हीरे समान! तो बरोबर ये जन्म ऊँचे–ते–ऊँच है और हीरे समान है। तो वैल्यू तो रखते हैं ना बच्चे कि वो हीरे समान, ये कौड़ियों समान और ये जिंदगानी ही हीरे समान बन रही है। इससे कोई भागता नहीं है। इससे भागता है कौन? जो बहुत दुःखी हो पड़ते हैं और ज्ञान नहीं है तो कहते हैं– कहाँ मरें तो अच्छा! शरीर छूटे तो अच्छा! ऐसे कहते हैं ना बच्चे! और तुम बच्चों को तो कितनी भी बीमारी हो, तो नहीं। ये समझ होनी चाहिए कि ये जीवन तो हीरे जैसा बनने का है। जितना जिएँगे इतना बाप का नाम सुनेंगे और याद करेंगे, तभी हीरे जैसा बनेंगे। तो गीत का पहले–2 अर्थ समझ करके और पीछे बजाना चाहिए। नहीं तो फिर बाबा कहेगा– ये अज्ञानी हैं, ज्ञान नहीं है कुछ भी; क्योंकि ये जो भी हैं गीत, ये दिन–प्रतिदिन बाप कहते हैं कि ये कम होते जाते हैं। इनसे कोई ज़रूरत नहीं है। कोई गीत हैं जिनसे अर्थ निकलते हैं अच्छा। तो वो गीत ही निकालकर रखे हैं। ये तो ढेर हैं, ये जो रिकॉर्ड हैं ना, बच्चे ढेर–के–ढेर हैं। ये लाखों के अंदाज में होंगे, ये जो रिकॉर्ड हैं। फिर इन, हर प्रकार के मनुष्य बजाते ही रहते हैं। तो इन रिकॉर्डों के ऊपर भी तो नहीं है अपना। बच्चों का तो है ही याद की यात्रा का ध्यान रखना, अपने ऊपर रहम करना। तो जिएगा तो रहम करेंगे ना, मरेंगे तो रहम क्या करेंगे या तंग होंगे अपने इस जिंदगानी से। आत्मा को इस समय में इस शरीर से तंग नहीं होना है; क्योंकि इस शरीर से ही तो बाप को याद किया जाता है। जिससे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। पीछे कितना भी पुरुषार्थ करें। ये भी तो है, कोई तमोप्रधान से कोई रजो तक भी पहुँच सके। ये भी तो हिसाब है ना बच्चे रखे हुए! कोई याद कर–करके तमोप्रधान से रजो तक भी पहुँच सके, तो भी फायदा ही है। रजो से और सतो पर पहुँच जावे, तो और जास्ती फायदा होवे; क्योंकि इस शरीर के साथ ही मेहनत करनी पड़ती है आत्मा को। शरीर न हो तो मेहनत नहीं कर सकते हैं, पुरुषार्थ नहीं हो सकते हैं। इसलिए तुम बच्चों को ये बाप कहते हैं, रूहानी बाप बच्चों को– तुम बच्चों को तो अभी बाप की ही याद का फिकर है। फिकर है; क्योंकि कहते हो कि बरोबर बाबा तूफान बहुत आते हैं, तो फिकर है ना– तूफान न आवें। तूफानों का फिकर है ना बच्चों को– तो ये तूफान न आवें, ये बाप के साथ ही बुद्धि जुटी रहे। हमारा योग बाप से अलग न हो; क्योंकि इसमें नुकसान हो जाएगा; क्योंकि फायदा भी है तो घाटा भी है। जितना–2 जो याद करेंगे इतना–2 फायदा है बहुत ही; जितना जो न याद करेगा इतना घाटा है। तो इस समय में तो बच्चे, जैसे कि बाप आए हैं और बहुत बड़े कारखाने खोले हैं हर एक बच्चे ने; क्योंकि ये भी तो कमाई के लिए दुकान खोला जाता है ना! तो देखो, बाप ने आ करके ये कमाई का एक बड़ा रस्ता खोला है। तो इसको कहा जाता है– श्रीमत से तुमने आ करके, ब्राह्मणों ने, बड़ा अच्छा दुकान खोला हुआ है। जिससे तुम बाप को याद करते बड़ी कमाई कर रहे हो। इसमें कोई प्रकार की सुस्ती भी नहीं चाहिए। जैसे कोई कमाई के लिए अपनी रोटी भी ले जाते हैं घर से बनाय करके कि फिर कौन आवे, कौन जावे। ये दुकान पर ग्राहकी वापस हो जाएगी। देखो, ओना रहता है ना कमाई का! अनेक प्रकार के ओने रहते हैं। तो तुम बच्चों को भी ये बहुत बड़ा भारी ओना है– हम जितना बाप को याद करेंगे उतनी हमारी कमाई–2 बड़ी भारी होगी और जितना दैवी गुण धारण करेगा इतना ऊँच पद मिलेगा। जितना फिर

औरों को भी रस्ता बताएँगे ये, तो और ही रस्ता बताएँगे। तो बाबा ने कार्ड भी छपाए थे आगे बॉम्बे में। जो वो डर के मारे बच्चों ने बाँटा नहीं है उसमें कुछ भी लिख करके; नहीं तो वो बहुत अच्छे हैं। जिनमें लिखा हुआ है कि त्रिमूर्ति शिवजयन्ती वर्थ डायमण्ड और बाकी सब जयन्ती वर्थ कौड़ी। अभी इनसे डरने की कोई बात नहीं है। कई–2 बैठ करके ख्याल करते हैं– वाह! नेहरु की। नेहरु की जयन्ती तो बहुत ऊँची मनाते हैं। उनके तो शरीर की राख को भी सारे परिक्रमा में भेजा है कि उनसे कुछ धरती अच्छी होगी; परन्तु लॉ क्या कहते हैं ईश्वरीय, कायदा क्या कहते हैं। ईश्वर खुद अपना कायदा सुनाते हैं ना! कुछ भी नहीं, जो कोई भी शरीर छोड़ते हैं, उनकी कोई भी वैल्यू पाई की भी नहीं इस समय में; क्योंकि इस समय में आत्मा भी तमोप्रधान है तो शरीर भी तमोप्रधान। अभी ये बात तो कोई जानते नहीं हैं। ये तो तुम बच्चे ही जानते हो कि हम जानते। अभी जो जानते हैं और निश्चय है, उस निश्चय को कभी भी कोई उल्लंघन नहीं कर सकेंगे। ...नहीं तो ये–2 ये तो निकालने चाहिए, ये बाहर में अभी लिख कर–करके। देखो बड़े–2 हैं ना, संन्यासी ये फलाना, ये महर्षि–फरर्षि। अभी उनके ऊपर ही लिख करके चिट्ठी भेज देना चाहिए उनको। भले वो प्रेजीडेण्ट को भेज देना चाहिए उनमें लिख करके भी कि त्रिमूर्ति शिव से तुम बहिश्त के मालिक बन सकते हो। इतनी तो अभी बुद्धि विशाल बुद्धि तुम बच्चों में आने वाली है। ये बाप समझते हैं कि विशाल बुद्धि आने वाली है अभी। इतना अभी निर्भय भी नहीं हुए हैं। नहीं तो वो तो त्रिमूर्ति बना ही था, बाबा ने ब्लैंक पेज के लिए कि इनके ऊपर लिख करके भेज देवें कि त्रिमूर्ति बाबा, शिवबाबा त्रिमूर्ति ही कहेंगे ना, तो त्रिमूर्ति शिव सर्व की सद्गति करते हैं। वो तो सारी दुनियाँ का सर्वेण्ट है जैसा और सबकी सद्गति करते हैं। उनके सिवाय तो सबकी दुर्गति ही है। तो मनुष्य नहीं समझते हैं कि हम कोई दुर्गति में हैं। कोई समझेंगे? देखो, ये महर्षि, फलाना–टीरा, ये सभी बड़े तूमान से रहते हैं। वो तो समझते हैं– हम तो स्वर्ग, स्वर्ग से भी कोई ऊँच पद पर हैं। स्वर्ग तो कोई चीज़ यहाँ है नहीं। स्वर्ग होता तो ये ये तो ज़रूर होते सतयुग में। श्री लक्ष्मी–नारायण का तो राज्य होता ना बच्ची! परन्तु ये तो, इसको तो कहा ही जाता है– आयरन एज। नाम थोड़े ही कोई फिर सकते हैं ऐसे कोई चीज़ का। तो बाबा ने वो जो छपाए थे, बहुत खर्चा किया था वहाँ बॉम्बे में उसके ऊपर, हज़ारों छपाए थे। तो देखो, कोई को भी वैल्यू मालूम नहीं है बच्चों को। इतने बच्चे हैं अच्छे–2, अपन को बहुत होशियार समझते हैं। कई तो बच्चे अपन को सबसे होशियार समझते हैं; परन्तु बाप जब ये बातें देखते हैं, तो बोलते हैं, वो कुछ भी समझ में नहीं आते हैं। डरपोक हैं बहुत। नहीं तो मैं आज ख्याल करता था, ये सभी निकाल करके, ऐसे–2 जो मनुष्य जो–2 औरों को बिचारों को गिराते ही रहते हैं, न खुद समझते हैं अपन को। बच्चे तो समझते हैं ना जो समझू बच्चे हैं! बेसमझ बच्चे ये भी बातें नहीं समझते हैं कुछ भी। अरे! जो समझते हैं वो करके दिखलाते हैं; जो नहीं समझते हैं वो नहीं करके दिखलाते हैं। तो जो करके दिखलाते हैं, उनको तो करके दिखलाना ही है। ये पड़े–3 सड़ जाते हैं। फिर शायद यही चीज़ फिर नई बनानी पड़े; क्योंकि सबको ये तो मालूम होना चाहिए ना, हम–2 शिवबाबा की तो महिमा करते हैं ना! रास्ता बताते हैं कि शिवबाबा अभी सद्गति करते हैं सर्व की। और तो कोई भी सद्गति तो किसकी कर ही नहीं सकते हैं। वो इनके लिए तो कोई कहेंगे कि भई; क्योंकि ये है ऊँचे–ते–ऊँचा सृष्टि के मालिक। कोई कहेगा कि क्या ये सृष्टि की सद्गति कर सकते हैं? अरे पर, सद्गति करे ही क्यों, जबकि है दुर्गत/सद्गति है। दुर्गति तो है नहीं। तो वो क्वेश्चन नहीं उठता है; क्योंकि ये है ही सद्गति में। तो बाप कहते हैं कि ये सभी समझाना है बच्चों को और भई बिल्कुल ही बेसमझ हैं, कुछ नहीं समझते हैं। बाप ने आ करके कहा है, ब्राह्मणों को कहा है ना कि बच्चे, तुम समझदार बन रहे हो। बाकी जो भी हैं ये सभी, ये बिचारे बिल्कुल ही बेसमझ हैं। बड़ा नशा है इनको अपने मत का, है ना, मानव मत का। मानव मत इज़ वर्थ नॉट ए पैनी वास्तव में; ईश्वरीय मत इज़ वर्थ पाउण्ड। तो इस

समय में मानव मत हैं ना, ये सभी मानव मत हैं। ये प्रेजीडेण्ट हैं, प्राइममिनिस्टर हैं। तो ये बाप बैठ करके समझाते हैं– कहाँ बेहद के बाप की मत, देखो श्रीमत भगवान की है। भई, श्रीमत भगवान की क्या बताती है? ये राजयोग सिखाते हैं। ये श्रीमत से, ये जो कलहयुगी इतना आंदोलन है, ये सब खलास हो करके स्वर्ग की स्थापना होती है। जिसके जो कुछ मेहनत करते हैं फिर ऐसा बनने के, वो निवास करेगा। जैसे तुम भी तो यहाँ आए हो क्या करने के लिए? श्रीमत पर चलने के लिए। सो सभी नहीं चल सकते हैं। ये बाबा समझते हैं कि क्यों नहीं चल सकते हैं; क्योंकि टाइम है अभी, इसलिए ड्रामा के प्लैन अनुसार इनमें बहुत हैं जो श्रीमत पर चल नहीं सकते हैं। समझा ना! यानी ड्रामा ही उनको नहीं चलने देता है, ऐसे कह सकें। भले कोशिश करते हैं कि चलना चाहिए श्रीमत पर; परन्तु नहीं, अभी देरी है ना थोड़ी–बहुत, तो वो नहीं चलते हैं। वो पीछे चलेंगे। जब वो समय नज़दीक आएँगे मौत का, पीछे चलेंगे। अभी बहुत थोड़े चलते हैं नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार; नहीं तो मत पर तो अंत तक चलना ही है कोई भी प्रकार से। जितना–2 मत बाप देते हैं, जितना टाइम पास होते हैं, इतना तुम जो पुरुषार्थ करते हैं सो ऊँचा चढ़ते रहते हैं। चढ़ती कला तो है ना बच्चों की! सभी बच्चों की चढ़ती कला है वास्तव में, जबकि अपने ऊपर अच्छी तरह से रहम करें और समझें इन बातों को। तो फिर इस बहुत अच्छी तरह से पुरुषार्थ भी करते रहें। समझे ना! और फिर उनको कोई भी, ये दुनियाँ तो क्या, ये ये कुछ भी अच्छा नहीं लगे। ये बंधन हैं ना सभी इस समय में! तो उड़ते रहें कि अभी जल्दी ये छोड़ करके उड़ें अपने। यहाँ से तो जा करके मुक्तिधाम में बैठ जावें। यहाँ रहने से तो कोई फायदा ही नहीं है। कुछ–न–कुछ तूफान, दुःख, फलाना–टीरा, खींचातान, ये हुआ, ये हुआ, ये घर टूटा, ये नया बनाना है, फिर चलो भागो, पैसा नहीं है, कर्जा उठाओ, देखो है ना! इससे तो आत्मा कहती है, सबकी कहनी चाहिए कि क्या, इससे तो जा करके जब तलक हमारे लिए स्वर्ग स्थापन हो तब तलक जा करके भला घर स्वीट होम में तो बैठें। अच्छा, उनमें नहीं बैठते हैं तो अच्छा भला शांतिधा/सूक्ष्मवतन में तो जा करके बैठें। बाबा ने समझाया था ना, जैसे मम्मा जाकर बैठी है तो उनको तो कोई फिकरात की बात नहीं है। यहाँ देखो फिकरात तो रहती है ना! तो अच्छा–2 हो ना! यानी ये भी कोई नीचे तो नहीं आई ना, ये तो ऊपर ही चढ़ गई ना! सूक्ष्मवतन में रहना अच्छा, इस समय में सूक्ष्मवतन में रहना अच्छा या इस स्थूल वतन में रहना अच्छा या स्वर्ग में रहना अच्छा? ये अपने से पूछना चाहिए, जजमेण्ट करना चाहिए। नहीं भई, इस–2 समय में यहाँ रहने से तो सूक्ष्मवतन में रहें; परन्तु रह नहीं सकते हैं; क्योंकि कर्मातीत अवस्था चाहिए आत्मा की। आत्मा की कर्मातीत भले अवस्था ही, बाबा जो कहते हैं ना– सज़ा भी खाय करके, कुछ भी कर–करके, भोगना भी भोग करके, फिर भी तो सूक्ष्मवतन में। अच्छा, सूक्ष्मवतन में भी तो सर्विस कर रहे हैं ना! तुम लोग क्या करते हो यहाँ? तुम जास्ती सर्विस करते हो या तुम्हारी मम्मा जास्ती सर्विस करती है? भला ये बताओ। मम्मा जास्ती सर्विस करती है; क्यों(कि) जहाँ–तहाँ मम्मा को बुलाते हैं। वो बैठ करके जो कोई भी थर्ड–क्लास, फोर्थ–क्लास जो होती है, उनमें भी प्रवेश, जैसे बाबा प्रवेश (कर) सर्विस करते हैं तैसे मम्मा सर्विस करती है। तो बाबा बड़ा, वो मम्मा बड़ी या ये बड़ा? इनसे तो और ही मम्मा का मर्तबा जास्ती हो गया है। जो बाबा के समान वो कोई के में प्रवेश करके ये ज्ञान देती रहती है। तो कोई फर्क हो गया? नहीं। बाबा और मम्मा वो तो आगे चले गए। यहाँ तो फिकर की बात रहती है, वहाँ तो बेफिकर है बिल्कुल ही; क्योंकि हर एक बात की समझ चाहिए। है ना! कोई जावे और मालूम पड़े कि ये सूक्ष्मवतन में है और बरोबर आती है। देखो, अभी भी तुम किसको भी यहाँ बैठ करके बुलाओ, तो मम्मा आ जाएगी, आय करके तुमको मुरली सुनाएगी, जैसे आगे सुनाती थीं; परन्तु उनसे भी अभी अच्छी सुनाएँगी; क्योंकि आगे तो स्थूलवतन में थीं, अभी तो सूक्ष्मवतन में है। तो जैसे बाबा है सूक्ष्मवतन में, आय करके और बाबा तो ऊपर से यूँ भी आते हैं; परन्तु सूक्ष्मवतन भी तो

अच्छा है ना! तुम बच्चे जाते हो सूक्ष्मवतन में, तो चलो इसका भी जो अव्यक्त स्वरूप है, वो भी तो अच्छा रहता है ना! उनका भी तो साक्षा(त्कार), वो भी तो आ करके मुरली सुनाते तो हैं ना! ऐसे तो नहीं कहेंगे कि वो नहीं आ करके सुनाएँगे; परन्तु उनका ये भी बैठा, ये भी सुनाय सकते हैं, वो भी सुनाय सकते हैं। अगर बाबा है तो उनके ही रूप से आ करके सुनाते भी हैं। जैसे यहाँ इनके रूप में सुनाते हैं। तो भी तो कोई तो सूक्ष्म रूप में आ करके सुनाएँगे ना बच्चे! अकेला जब होगा आत्मा तभी तो नहीं कुछ समझाय सकेंगे ना! या तो सूक्ष्मवतन में होगा, सूक्ष्म शरीर में आएगा या तो स्थूल शरीर में आएँगे। बिगर कोई शरीर कुछ काम तो नहीं कर सकते हैं। तो जभी सूक्ष्मवतन में जो होते हैं, तभी यहाँ आने में तो टॉकी बनेगा। सूक्ष्मवतन में तो मूवी बनेगा। तो मूवी, तो सिर्फ जो यहाँ के बच्चे जाते हैं, उनको कोई बैठ करके ज्ञान सुनाएँगे क्या? उनको तो डायरैक्शन से लेन–देन करेंगे। फिर भी तो आना तो यहीं है। तो इसमें नहीं आते हैं, कोई में भी आते हैं, सर्विस पर ही आते हैं। ठीक है ना बच्चे! जैसे ये है आम सर्विस तैसे वो भी आम सर्विस है। उनको यहाँ की गिटगिट नहीं है, इनको यहाँ का तो फुरना रहता है। है ना! यहाँ देखते हैं, बच्चे कोई भूलें वगैरह करते हैं, कोई उल्टा–सुल्टा चलते हैं, तो बाबा कहते हैं– देखो, ये अपना नुकसान कर रहे हैं। तो इनको आएगी ना फीलिंग! मम्मा को तो फीलिंग नहीं आएगी। अच्छा, संपूर्ण बाबा को तो फीलिंग नहीं आएगी। उसके पास जाते तो हो ना बरोबर! उनको तो फीलिंग (...); क्योंकि सूक्ष्मवतन में है। इनको तो फीलिंग आती है ना! कोई भी उल्टा–सुल्टा काम करे, तो इनको फीलिंग आती है ना! सूक्ष्मवतन वालों को क्या फीलिंग आएगी। कुछ भी नहीं, कोई कुछ भी जाकर करे। तो उनको नहीं, वो तो समझ जाते हैं– ये जो कुछ उल्टा–सुल्टा काम करते हैं या ठीक से कायदे से नहीं चलते हैं या यज्ञ की सर्विस में ठीक अटेन्शन नहीं देते हैं, वो अपना नुकसान करते हैं। वो समझ लेते हैं। इनको फिकरात होती है कि ये देखो, अच्छा सर्विस ठीक नहीं करते हैं। इन बिचारा का पद कमती हो जाएगा, ये हो जाएगा और ये बताते रहते हैं ना, मुख से बताते रहते हैं सब बात और सावधानी भी देते रहेंगे। वो कैसे सावधानी देंगे? तो सूक्ष्मवतन में जाकर रहना, वो तो अच्छा ही है ना बच्चे! कोई–2 ऐसे तो नहीं है कि कोई; क्योंकि अभी जो कोई मरते हैं तो समझते हैं हम आत्माएँ कि और दुर्गति को (...)। अज्ञानी कोई भी मरते हैं, तो हमको ये ख्याल, ज्ञान मिला है ना, ये ख्याल होता है– ये तो और दुर्गति को पाया। भले कितना भी अच्छा काम किया, चलो धन दान किया..., तो भी तो देखो नीचे तो उतरा ना! एक डाका नीचे तो उतरा ना! तो नीचे जो उतरा, वो तो अच्छा नहीं हुआ ना बच्चे! तुम बच्चे अगर ऐसे करेंगे कुछ उल्टा–सुल्टा तो और ही नीचे डाका उतर जाएँगे। तो ये सीढ़ी की, सीढ़ी की समझ कोई कम थोड़े ही बच्चे! सीढ़ी की समझ बड़ी फर्स्ट–क्लास है एकदम। किसको भी तुम सीढ़ी के ऊपर समझाओ, कैसा भी कोई होवे, तो उनको बोलो– देखो 84 का जन्म, पुनर्जन्म तो मानते हो ना, पुनर्जन्म माना ही सीढ़ी में आना। समझे ना! पुनर्जन्म का अर्थ ही है कि पुनर्जन्म ले करके सीढ़ी के नीचे आना। पुनर्जन्म का अर्थ ही ये निकलते हैं कि पुनर्जन्म लेते हैं। ऐसे कभी नहीं कहेंगे– पुनर्जन्म लेते हैं, डाका ऊपर चढ़ते हैं। ऐसा कोई समझता होगा? नहीं, पुनर्जन्म माना ही; क्योंकि ये सभी बातें दुनियाँ में मनुष्य नहीं जानते हैं। पुनर्जन्म लेना, कोई का भी, कोई भी हो, भले इनके ऊपर भी आओ। पुनर्जन्म लेना माना ही डाका नीचे कमती आना, कुछ–न–कुछ। वो तो डाके बड़े हैं। बाबा थोड़ा–2 कहते हैं ना, कला कमती होती है तो थोड़ी–2। तो ये भी देखो, ये भी ये भी पुनर्जन्म माना ही नीचे आना। कि इस समय में कोई पुनर्जन्म में नहीं आते हो। इस समय में पुरुषार्थ करते हो सतोप्रधान बनने के लिए। ये चढ़ते हो। ये जो तुम्हारा पुनर्जन्म है, ये है पुरुषार्थी। बस ये ही एक जन्म है, जो पुनर्जन्म से हम ऊपर चढ़ते हैं। बस, बाबा अगर न है जब, बाकी जो भी बच्चे हैं, जो ऊँचा पद पाते हैं, फिर शुरू कर लेते हैं उतरने के लिए। पुनर्जन्म का मतलब ही फिर ये हो जाते हैं। ये तुम्हारा ऊपर

चढ़ने को, पुनर्जन्म नहीं कहेंगे फिर इसको; क्योंकि पुनर्जन्म तो सब जानते हैं कि भई, नीचे–5। ये तुम्हारा जन्म, ये तो हीरे जैसा बनना, ये तो चढ़ाई का है। समझा ना! दूसरा जन्म लेते हैं हम ज़रूर; परन्तु हम ये पुरुषोत्तम, उत्तम जन्म लेते हैं। यही जन्म तुम बच्चे जानते हो कि इस जन्म से, हम जो पुनर्जन्म ले करके वो थर्ड ग्रेड में हम जाकर पहुँचे हैं, अभी हम फर्स्ट ग्रेड में जाते हैं। तो अभी तुम बच्चों को नॉलेज मिली इस समय में कि बरोबर और सभी मनुष्य जो भी हैं, वो नीचे–2 गिरते जाते हैं। कोई भी होवे, महात्मा होवे, ऋषि होवे, मुनि हो, कोई भी हो, वो ग्रेड नीचे कमती आए। जबकि इस सीढ़ी का तो कोई और मनुष्यों को मालूम नहीं है। किसको भी मालूम नहीं है। ऐसे कोई भी महर्षि होगा, उनको बुद्धि में ये नहीं होगा कि हमने 84 जन्म लिया है, ये हमारा अंतिम जन्म है। ये हम श्रीमत पर और बाप को याद करते तो ऊपर चढ़ जाएँगे। सिवाय तुम ब्राह्मणों के और तो कोई भी नहीं जानते हैं और ये तुम बच्चे ....स्वर्ग में तो जाएगा ही नहीं। ये तो जानते हो कि बाकी जो भी हैं धर्म, वो तो सभी आएँगे ही पीछे। तो ये सभी नॉलेज कोई भी मनुष्य के पास तो कोई में भी नहीं है ना बच्चे! ये तो तुम बच्चों को मिलते हैं धारण करने के लिए। अब कोई धारण करे, है ना! ये तो देखने में आते हैं अच्छी तरह से, कोई धारण करते हैं और कोई कम, कोई उससे कम, कोई उससे कम। सो तो–2 ड्रामा का प्लैन ही ऐसा बना हुआ है। बना हुआ है ड्रामा का प्लैन कम–5 ऐसे कर–करके; क्योंकि राजधानी स्थापन हो रही है बड़ी। तो इसमें पढ़ाई के जो स्टूडेण्ट होते हैं, वो तो कहेंगे ना– हम अच्छा पढ़ करके हम ऊपर में जाएँ। तुम लोग तो ऐसे ही समझो, हम स्कूल में पढ़ रहे हैं। हम स्कूल में पढ़ रहे हैं और हमारी बुद्धि है कि हम अच्छी तरह से पढ़ करके हम ऊपर में जावें। नहीं तो नीचे में पता नहीं कहाँ नीचे चले जाएँगे! जैसी–2 चलन होगी ऐसी–2 नीचे चले जाएँगे। तो ये तो समझ सकते हो ना बच्चे कि कौन इतना पुरुषार्थ करते हैं। .....दिल के अंदर– अभी हम जाते हैं मुक्तिधाम; क्योंकि बच्चों को सबको खुशी बहुत होनी चाहिए। जिसको ये मालूम पड़े कि हम मुक्तिधाम में जाते हैं ये बाबा द्वारा, बड़ी खुशी होवे। समझा ना! संन्यासियों को बड़ी खुशी होगी। जब तुम संन्यासियों को ज्ञान देने लगेंगे, वो समय भी आएँगे, जब उनको रस्ता बताएगा मुक्ति का, वो बहुत खुश हो जाएगा। बहुत खुश हो जाएगा, ओ अहो प्रभु! फिर प्रभु को बहुत याद करेगा; परन्तु देरी है ना....! ये तो बाप जानते हैं, देखो बाप भी आहिस्ते–2 गाड़ी को चलाते रहते हैं, देरी है। ट्रेन है ना ये भी, फिर स्टीमर कहो, ट्रेन कहो,... कुछ भी कहो, वो तो जल्दी तो जा नहीं सकती है ना! तुम भी बच्चे कहते होंगे कि जल्दी–2 स्वर्ग में बदली। जल्दी तो ट्रेन चलेगी नहीं। ये तो बहुत धीरे–3, तो धीर्य देते रहते हैं बाबा कि बच्चे तुम्हारे लिए सुख के तो आते ही हैं दिन। जो भी तुम हो ब्राह्मण, तुम्हारे लिए सुख के तो आते ही हैं; परन्तु ये तो बुद्धि से तुम लोग समझते हो अच्छी तरह से कि राजधानी होगी, हाँ उनमें सब प्रकार के मनुष्य होंगे। उन सबने जो–2 भी पद प्राप्त किया है सो पुरुषार्थ से। देखो यहाँ भी अभी रहो, जब यहाँ हो। तुम जानते हो कि ये जो भी प्रेजीडेण्ट वगैरह, राजा, पद्मपति, लखपति, करोड़पति या, ये जानते हो ना कि भई, ये कर्म का हिसाब है। इनने आगे जन्म में कुछ ऐसा कर्म किया है जो ये साहूकार बना है, ये गरीब बना है, ये पुण्यात्मा बना है, ये बिल्कुल ही पापआत्मा बने हैं। ये तो समझ सकते हो ना! तो अच्छा उसी हिसाब से, अगर तुम ये समझते हो कि बाप पढ़ाते रहते और हमारी दैवी सम्प्रदाय समझ, तो इसमें भी तो यही बुद्धि आएगी ना कि हम पढ़ करके (...)। अभी तो स्टूडेण्ट्स हो और पढ़ रहे हो। ये तो समझ सकते हो ना कि हम क्या पढ़ते हैं, क्या करते हैं, बाबा की क्या सेवा करते हैं। समझा ना! सेवा करनी चाहिए ना बच्ची ये! यानी खुद अपनी सेवा कर, फिर औरों की भी तो सेवा करनी है ना! बाबा ने समझाया ना– औरों की सेवा जो कोई नहीं कर सकते हैं, वो अपनी नहीं करते हैं। वो दिल में ऐसे खुश न होवे कि हम कोई बाबा को याद करते हैं। नहीं, वो याद नहीं करते हैं; क्योंकि दूसरे तो कोई को याद दिलाते नहीं। जो बाबा कहते हैं, बच्चे आते

हैं ट्रेन में, हाँ बहुत आते हैं, देखो सब, बहुतों के ऊपर तो देखेंगे, सबको बैज पड़ा हुआ है। कोई को देखो एक भी नहीं, कोई को देखो तो कोई एक/दो के हैं। ये क्यों? उनको लज्जा आती है, वो उनको लज्जा नहीं आती। बोलते– सर्विस करनी है, हम इनसे बहुत ही सर्विस कर सकेंगे। तो लज्जा भी तो आती है ना बच्चों; क्योंकि देहअभिमान है बहुत। है ना! इसमें देहअभिमान की तो कोई बात ही नहीं है। ये तो बड़ी फर्स्ट–क्लास चीज़ लगी हुई है। है ना! बहुत बच्चे कहते हैं– मिलिट्री में हुक्म नहीं है। अरे, तुम मिलिट्री को सिर्फ समझाओ अच्छी तरह से। फिर ऐसे तो तुम देखते हो, समझाते तो बहुत को हो, पीछे कोई समझते हैं, कोई नहीं समझते हैं और ये भी बच्चे जानते हैं– कोई समझेंगे, कोई नहीं समझेंगे। मैनॉरिटी समझेंगी, मैजॉरिटी नहीं समझे। समझा ना! थोड़ा समझेंगी; क्योंकि प्रजा बनेगी, वो क्या समझेगी, थोड़ा ही समझेगी ना! तो जो जास्ती समझेगा, देखो तुमको समाचार तो आते हैं प्रदर्शनियों से– तो भई ये जो गवर्नर है ना, ये गवर्नर बहुत अच्छा समझता था। बहुत समझते थे– ये कैसे तुम लोग ये सब समझाते हो। तो महिमा भी करते थे, ओपिनियन भी लिखते थे। अभी कोई गवर्नर (का) ओपिनियन आया– इट इज़ डायर नॉनसेन्स! हम इसको नॉनसेन्स समझते हैं। ये सभी कल्पना है या ये बोगस है या डाग–2, क्या कहते हैं डॉगमेटिक (स्वमताभिमानी) है, फलाना है। तो तो सब तो नहीं समझते हैं ना! कोई कैसे समझते हैं, कोई कैसे समझते हैं। तो बच्चे समझ सकते हैं कि ये जो कुछ समझते हैं, आगे चल करके शायद ये समझेंगे। इनको कुछ थोड़ी कोशिश कर देंगे और वो मान से बिठाएँगे तो खुश होंगे बच्चे जो समझेंगे और बाकी जो होगा, उनके पास जाएँगे तो और ही इनसल्ट कर देंगे। कौन जाएगा उनके पास! तो है तो, देखते हो, परीक्षा तो तुम लोग को मिलती रहती है ना! उसमें ऐसे ही गवर्नर दूसरा, फिर दूसरे भी ऑफिसर्स हैं। कोई व्यापारी हैं, कोई कैसे हैं। तो तुम भी तो वो ही थे ना सभी– कोई क्या थे, कोई क्या थे, कोई क्या थे। तो देखते हो तो गरीब अभी लेते रहते हैं; क्योंकि पहले–2 गरीब ही लेंगे। क्योंकि बाप का नाम इसलिए ग़रीबनिवाज़ ही पड़ा हुआ है। कि पहले गरीब लेंगे; क्योंकि मैं साधारण तन में ही प्रवेश करता हूँ। देखो, वो भी सब बताया कि मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। ये साधारण तन ये वो ही है जो बिल्कुल ही असाधारण था। समझा ना! क्योंकि बाबा कहते हैं कि कृष्ण, अरे कृष्ण, कृष्ण का तो चेहरा ही एकदम ऐसा होगा जो बात मत पूछो। यहाँ का वो असाधारण था, असाधारण है ना बहुत! अच्छा, इस समय में देखो कृष्ण खड़ा हो जाए, भले साक्षात्कार भी तो करते हो ना! मनुष्य कृष्ण के लिए कितना मेहनत करते हैं, पूजा करते हैं। जब देखते हैं, कितना गद्गद हो जाते हैं। तुम लोग कभी साक्षात्कार करो तभी तो मालूम पड़े। समझा ना! क्योंकि उस समय में जब साक्षात्कार होते हैं तो फिर ज्ञान नहीं है। जभी ज्ञान हो जाते हैं तो फिर साक्षात्कार भी हो, तो उनका भी कोई–2 ख्याल नहीं। तो पहले–2 जब साक्षात्कार होते हैं, अरे जैसे बच्चे कहते हैं वा गीता में है कि चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ। तो चतुर्भुज का साक्षात्कार क्या कराया। अरे! ऐसे तुम तेजोमय बनेंगे। उस समय में जब देखते हैं, रात–दिन का फर्क रहता है ना, जो चैतन्य और जड़ में। जड़ तो वो बुद्धि में बैठा हुआ है कि बनाया हुआ है। वो जो खड़ा हो जाता है एकदम चैतन्य, समझे ना, या ऊपर में हाथ रख देते हैं। तो उस समय में गद्गद् हो जाते हैं मनुष्य। समझा ना! परन्तु उससे फायदा ही क्या होता है, जब तलक ज्ञान न प्राप्त करें। जो ये बन सकें। तो बन सकने के लिए बाप रोज़–2 समझाते रहते हैं कि बच्चों, साक्षात्कार–वाक्षात्कार में कुछ भी नहीं रखा हुआ है। मेहनत करनी पड़ती है। है ना! देखो शुरू का साक्षात्कार है, इस समय तक मेहनत चलती रहती है कि हम कर्मातीत अवस्था को पाएँ, तब ये पद प्राप्त होगा। साक्षात्कार इसलिए हुआ ना! तो इस समय में ये ज्ञान मिलता है बच्चों को। भक्तिमार्ग में किसको ज्ञान नहीं मिलता है। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी नहीं, साक्षात्कार किया, खुश हुआ, बस खलास। अभी तो प्रैक्टिकल बात है ना! तो बच्चों को जो साक्षात्कार होता है इसलिए कि अभी मन्मनाभव,

बाप को याद करते रहो, शिवबाबा को याद करते रहो और वर्से को याद करते रहो और तभी तुमको ये पद फिर मिलेगा और पावन (...)। क्योंकि अभी तुम समझते हो कि बस, जो कुछ भी मनुष्य का ये करते हैं भक्तिमार्ग के क्रियाकर्म अनेक प्रकार के, ये सब वेस्ट ऑफ टाइम, सीढ़ी उतरते ही जाते हैं। कितना भी गोता खावे, कुछ भी करे, सीढ़ी उतरते ही जाते हैं और सीढ़ी चढ़ने का तो सिर्फ एक ही बच्चों को मिला है रस्ता...। तो ये भगवानुवाच है ना बच्ची! सो भी अभी तुम बच्चे जान गए– कृष्ण भगवानुवाच ये नहीं है; क्योंकि गीता वाले जो भी हैं, वो तो जभी ऐसे पढ़ते भी होंगे तो कृष्ण को ही याद करेंगे– श्रीकृष्ण भगवानुवाच। अभी कृष्ण को वास्तव में ये संन्यासी लोग, वो वो जानते ही, मानते ही नहीं हैं। क्यों नहीं मानते हैं? क्योंकि वो कोई जीवनमुक्ति पद पाएँगे थोड़े ही, जो माने उनको। नहीं, वो तो वो ही दूसरे को बताने के लिए, पैसा कमाने के लिए गीता उठाई है। नहीं तो आगे कोई संन्यासी गीता थोड़े ही कुछ सुनाते थे। नहीं, वो ब्राह्मण जो होते थे ना, वो भी ये वो पुष्कर के। पुष्कर अलग है, अजमेर अलग है। समझे ना! अजमेर को पुष्कर नहीं कहा जाता है। पुष्कर का तो तीर्थ है। अजमेर तीर्थ नहीं है। अजमेर से कुछ थोड़ा दूर, 10/12/15 माइल दूर वहाँ है। लेक भी वहाँ है। वो वो तीर्थ है बहुत अच्छा। वो पुष्कर है, वो छोटा पुष्कर, बड़ा पुष्कर, तीसरा पुष्कर, ऐसे–2 पुष्कर है वहाँ। उसका नाम पुष्कर है। तीर्थ पुष्कर है। अजमेर...तीर्थ नहीं है बिल्कुल। वो तो शहर है। शहर से दूर है वो पुष्कर। तो वो तीर्थ में वो स्नान वगैरह करते। सो तीर्थ कैसे बने हैं? अगर वण्डर खाएँगे, अगर पढ़ेंगे तीर्थ, तो सब गपोड़े ही गपोड़े। है ना! देखो गपोड़े हैं ना! हरिद्वार तीर्थ, अभी क्या है, गपोड़ा नहीं है तो भला क्या है! बस भई गंगा क्या पतित–पावनी है! इसलिए मनुष्यों ने, मनुष्य जा करके वहाँ घर बहुत बनाए हैं। काशी में भई गंगा बहती है, अच्छा वहाँ बहुत जा करके तीर्थ बनाए हैं। बस, क्योंकि भक्तिमार्ग है ना! भक्तिमार्ग के लिए तीर्थ चाहिए ना! तो बस तीर्थ ऐसे बने हैं, बस। कहाँ पानी, कहाँ लेक, कहाँ क्या चीज़, कहाँ क्या चीज़। फिर कुछ–न–कुछ ऐसे हुआ, ऐसे हुआ; इसलिए वो तीर्थ बना। ये बनावट है और ये भी जानते हो कि जो–2 भी पास्ट हुआ वो समय, जैसे कि वो ..... होती है ना बिजली की वो फिल्म की रोल, वो रोल जो है ना, वो थोड़ा–3, टिक–4, फिर जो भी ड्रामा चलता, टिक–2 फिरता जाता है। एक सेकेण्ड भी न होगा, दूसरे जो पास्ट हुए सेकेण्ड, उन जैसी सीन नहीं होगी कभी भी। तो ये फिर बेहद का बहुत बड़ा। ये भी ऐसे ही है जैसे कि कोई सीट, वो जो फिल्म बनाते हैं, वो सेकेण्ड–ब–सेकेण्ड ये जैसे कि फिरता रहता है और हम टॉकी हैं ना अभी देखो! तो हम टॉक कर रहे हैं, धंधा–धोरी कर रहे हैं सभी। तो ये बेहद का जैसे है तैसे ये भी तो समझना चाहिए ना बच्चे! तो जब इन्हीं बातों में समझ में बैठें और बाप को भी याद करें, ड्रामा को भी याद करें, उसको ही कहा जाता है– विचार–सागर–मंथन। तो अभी इतना कोई याद थोड़े ही करते हैं। नहीं बच्चे, वो झरमुई–थरमुई–फरमुई में कोई याद करते, कोई नहीं याद करते हैं, कोई ये बाप को याद करके बड़े हर्षित रहते हैं, जब देखो तभी हर्षित ही रहते हैं। जिनको पक्का निश्चय हो जाता है ना बिल्कुल अच्छे, उनको तो सदैव हर्षित ही रहते हैं। बोलता– अभी तो हमारे सुख के दिन आ रहे हैं, बहुत सुख के दिन आ रहे हैं। वो तो खुशी रहेगी ना! तुम बच्चों को तो ज़रूर ये तो होना चाहिए ना– हमको बहुत सुख के दिन आ रहे हैं। हम जितना बाबा को याद करेंगे, इतना बहुत सुख के दिन आएँगे। बाबा ने समझाया ना कि सतयुग और त्रेता में रात–दिन का फर्क पड़ जाता है। कि त्रेता को कोई सतयुग नहीं कहा जाता है। ना! तो सतयुग में जाना, हमको तो अच्छा, ये बहुत अच्छा है ना बच्ची; क्योंकि पीछे तो त्रेता के अंत में, अभी समझो किसका त्रेता के अंत में राजाई कब चालू हो, तो त्रेता के अंत में, जैसे बाबा कहते हैं ना– पिछाड़ी में किसका जन्म है तो जैसे मच्छर के माफिक आया–गया, जैसे मुक्तिधाम में रहा, तैसे ये भी, भई राजाई तो चाहिए स्वर्ग की, वो स्वर्ग की राजाई प्राप्त न कर आ करके त्रेता के पिछाड़ी में राजा बना और झट वाममार्ग में

गया, गिरा। उसमें–2 क्या हुआ, वो तो कोई मज़ा की बात नहीं रही! तो ये बाप समझाते रहते हैं ना बच्चे, पुरुषार्थ कर–करके और ऊँचा पद पाओ। पूछो कि हमारा बाबा हमारी चलन कैसे? मैं फट से बता देऊँगा। समझा ना! ये जो तुम्हारी चलन इस समय में चल रही है, उनमें तुम्हारी कोई उन्नति नहीं होगी। तुम त्रेता के पिछाड़ी में आ जाएँगे। त्रेता भी कोई एक दिन की बात थोड़े ही है, साढ़े बारह सौ बरस। उसमें कितना जन्म भी तो लेना पड़ता है ना! तो घाटा तो नहीं डालना चाहिए ना! बाप तो कहते हैं– कोई भी बच्चा घाटा नहीं डालो अपना, अपन में। घाटा भी आपे ही डालते हैं, समझा ना, अटेन्शन न दे करके, याद न कर–करके या सारा दिन देहअभिमान में रह कर–करके या कहाँ–का–कहाँ बुद्धि चली जाती है यानी एक बिगर दूसरे को तो याद करना ही नहीं है बिल्कुल। बाबा इसके लिए भी तो कहते हैं ना फोटो–2, बोलता– नहीं। भले ये घर है उनका, रहते, तभी यही तुमको काम में नहीं आएगा, वर्थ नॉट अ पैनी है। शरीर वर्थ नॉट अ पैनी। देखो, बाबा लिखते हैं ना– शिवजयन्ती भई वर्थ पाउण्ड, बाकी वर्थ पैनी। अभी ये पाउण्ड क्यों कहते हैं तीनों के साथ? तीनों बिगर तो काम नहीं चलते हैं। अकेला, शरीर नहीं होगा तो शिवबाबा करेगा क्या! तभी तीनों तो वो समझे कि भई, त्रिमूर्ति ब्रह्मा,विष्णु,शंकर इनके साथ में जन्म लेते हैं और ये समझाया जाता है कि कहाँ शिव, कहाँ ब्रह्मा, फिर ब्रह्मा कौन है, वो भी बताया जाता है। भई, बहुत जन्म के अंत के जन्म का शरीर ठहरा। तो वो वर्थ नॉट अ पैनी ठहरा ना! हिसाब से तो हुआ ना! तो हम तो कहते हैं कि त्रिमूर्ति शिवजयन्ती यानी जो तीन रचते हैं, वो रचने वाला जो शिव है, वो है वर्थ डायमण्ड। ऐसे नहीं कहा जाता है कि ब्रह्मा भी वर्थ डायमण्ड है या शंकर भी वर्थ डायमण्ड है। ना, बाबा कहे– त्रिमूर्ति शिवजयन्ती। भई, त्रिमूर्ति को भी रचने वाला जो रचता है। तो रचता तो एक हुआ ना बच्चे! तो महिमा ही वास्तव में सिर्फ एक की है। तभी बाबा कहते हैं कि वो जो लिफाफे रखे हैं, रात को ख्याल आता था हम निकालें और ट्राई करें। 100/50/200 कोई अच्छे–2 आदमियों को कुछ–न–कुछ लिख करके भेज देवें; क्योंकि ये समझाते तो रहते हैं ना कि मनुष्य किसको सद्गति दे नहीं सकते हैं, मनुष्य किसको भी मुक्ति वा जीवनमुक्ति दे नहीं सकते हैं– न खुद पाय सकते हैं, न किसको दे सकते हैं। तो गुरू भी नहीं दे सकते हैं। तो उन लोग को ये लिखने से, भले वो लोग सोच करे– क्या है? क्योंकि लिखा भी रहा हुआ ना बच्चे! गोला भी तो है ना उसमें सृष्टि का! उसमें तो बड़ा क्लीयर है। गोला बहुत क्लीयर है। हम देखते हैं कि जो बैज बन करके आती हैं ना, तो उनमें देखते हैं कि गोला तो देखने में नहीं आते हैं। कि दो तरफ होते हैं, एक तरफ में त्रिमूर्ति है, दूसरी तरफ में लक्ष्मी–नारायण हैं। यहाँ दी है। तो गोला जो ज़रूरी है चक्कर का, वो तो है नहीं। तो देखो, मैं आज नोट करके रखा कि लिखता हूँ बॉम्बे में– तो वो कट करके गोला क्या करते हो? कहाँ फेंकते हो, क्या करते हो? तुम गोले का भी बनाय सकते हो। तुम गोले पर सारा ज्ञान समझाय सकते हो। ये जो गोला है चक्कर, 84 का चक्कर, अभी वो चक्कर को उड़ाय देना। हाँ कहाँ फेंक देते हैं, क्या करते हैं। तो बाबा ने कहा– आज लिख देता हूँ– चक्कर कहाँ, ये गोला कहाँ? है ना! क्योंकि वो तो हिर गए ना उनमें लगाने का, एक तरफ में वो है, एक तरफ में वो है। बस, इनका हिर–3 तो गई नहीं है। कहाँ–2 देखा है ज़रूर कि लगाते हैं गोला; परन्तु गोले कम देखने में आते हैं; नहीं तो हर एक चित्र में गोला तो है ही बहुत करके तो। कोई में दो हैं चित्र, कोई में तीन चित्र हैं और–2 बिगर चित्र तो कोई है नहीं। दो या तीन चित्र हैं, एक नहीं है कोई में भी। समझा ना! एक कोई में भी नहीं है, याद आते हैं जैसे कि। तो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं, ये सभी बातें बुद्धि में रखनी पड़ती हैं; क्योंकि बाप–2 के तो बुद्धि में सब–कुछ है ना, तुम बच्चों के भी बुद्धि में ये सभी बातें ज्ञान की रहनी चाहिए। तभी तो सर्विस कर सकेंगे। नहीं तो देखो जडे पड़ जाते हैं। सर्विस नहीं करने से, कुछ भी समझाने से, कुछ भी मनुष्य कोई काम का ही नहीं रहता है जैसे। जैसे कि ज्ञान है ही नहीं; क्योंकि यहाँ जो बच्चे बैठे रहते हैं, उनको

ज्ञान कोई कहेंगे, कोई बुलाएगा किसको। बाबा लिख देते हैं– भई, हमारे पास फलाना है। लिस्ट–2 बना करके भेज देते हैं। तुमको जितना चाहिए इतना ले लिओ। कोई भी नहीं मंगाते हैं। नहीं तो ये क्या आ करके करेंगे! ये तो हमारे सर्विस का है नहीं। किसको भी बैठ करके समझावे, ऐसा तो कोई है नहीं, एक भी नहीं है एकदम। अगर है तो भी सेकण्ड–थर्ड गिने जाते हैं। नहीं तो कोई निमंत्रण नहीं देते हैं कभी भी। निमंत्रण देते हैं आजकल किसको– भई गुल्ज़ार को, कुमारका को, जगदीश को देंगे, मोहिनी को देंगे, ऐसे फिर ज्ञान देते हैं। बाकी जो काम पर आते ही नहीं हैं, कोई बुलावे तो भी नहीं जावे, तो उनको बुलाएँगे भी नहीं; क्योंकि इससे सिद्ध होता है कि वो नहीं सर्विस कर सकेंगे। ऐसे भी तो है। तो सर्विस तो करनी है ना बच्चों को! तो इसी समय में यही तुम्हारा जीवन है ही, सर्विस से ही बनेगा। बिगर सर्विस तो बनेगा भी नहीं। सर्विस करना माना अपने ऊपर कृपा करनी कि भई, हम बहुतों की सर्विस करते हैं। तुम बच्चे देखते हो, तुमको सर्विस का समाचार सुनाया जाता है। तो तुम सुनते हो, एक कान से सुनते, दूसरे कान से निकाल देते हो। सर्विस सुनाई क्यों जाती है? कि इनको उमंग आवे कि हम भी जाकर ऐसी सर्विस करें; परन्तु उमंग नहीं आते हैं तो एक कान से सुनते हैं, दूसरे कान से उतर जाते हैं। है ना! कोई कहते हैं कि अच्छा, हमको हम–3 भी चार्ट लिखते हैं। चार्ट लिख करके क्या करेंगे? चार्ट से भी तो कोई काम नहीं। सर्विस करेंगे तब तो मालूम पड़ेगा ना! चार्ट रख करके बैठ जाएँगे, वो कोई भी एतबार नहीं करेंगे, विश्वास ही कोई नहीं करेंगे बच्चा। वो तो मैदान पर चाहिए ना, युद्ध के मैदान पर। युद्ध के मैदान पर क्या, बैठ जाता है क्या? नहीं, युद्ध के मैदान में आय कर–करके सर्विस करनी होती है समझाने के लिए। तो ये अपने आपसे बैठ करके कोई पूछते भी नहीं हैं। जो डल हेडेड होते हैं ना! पूछते, मैं करता क्या हूँ? हमको क्या पद मिलेगा? हम बाबा की सर्विस तो करते ही नहीं हूँ। हम क्या जगदीश माफिक हूँ, गुल्ज़ार माफिक हूँ, कुमारका माफिक हूँ, भला थर्ड–क्लास में कोई के माफिक हूँ? अच्छा, भण्डारी के माफिक हूँ? भण्डारी के माफिक भी नहीं है। वो भी तो बिचारी सर्विस करती है ना बहुतों का! जो इतने आते हैं ढेर, उनका भोजन बनाना, ये तो सर्विस है ना! ये स्थूल मोटी सर्विस है। तो भी बहुतों को सुख मिलता है, वो थोड़ा–4 सुख वो इकट्ठा हो करके उनके पास मिलते हैं। बाकी जो ये भी काम नहीं करते हैं, उनको मिलता क्या है? धूर मिलता है? छांई मिलता है? कुछ भी नहीं मिलता है। ये बाप समझते हैं इनमें और बाहर वालों के में कोई जास्ती फर्क नहीं है। है ना! जो बाहर वाले हैं, जो और ही संगमयुग पर नहीं हैं। वो जो हैं रिलीजियस माइण्डेड, जो अच्छे मनुष्य होते हैं, वो और वहाँ के जो रहने वाले हैं, इन दोनों में कोई फर्क नहीं। तो समझ में ऐसे; क्योंकि बुद्धि तो वर्क करती है ना! इसमें भी बाप की तो बुद्धि अच्छी वर्क करती है ना– इनको जो मैं पढ़ाने आया हूँ, ये क्या काम के हैं। पढ़ते भी कुछ नहीं हैं, धारणा भी कुछ नहीं है, और न कोई सर्विस ही करते हैं। और ही सर्विस न करेंगे तो कुछ–न–कुछ डिससर्विस करते ही रहेंगे, किसको दुःखाते रहेंगे, किसको तंग करते रहेंगे। तो वो क्या फायदा पाएगा? कुछ भी नहीं। समझे ना! और ही दूसरी तरफ, दूसरे को खुश करना है पद प्राप्त कराय करके और उनको तंग कर–करके और उनको अपना भी पद कमती करना है। तो ये सभी–2 विचार–मंथन की बातें हैं सब; क्योंकि मुख्य बात है पवित्र रहने की। अच्छा! चलो भई, टोली ले आओ।.....खुशी थोड़े ही होती है, कुछ भी नहीं एकदम। श्रेष्ठ बातें सुनना, बाकी मनुष्यों की बात नहीं सुनना, जिसमें कोई कल्याण नहीं है; परन्तु सुनते रहते हैं बहुत यहाँ।

मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।